पाठ–21

कविता का कमाल

आइए सीखें : ● कविता लिखने की प्रेरणा। ● संयुक्ताक्षर वाले शब्दों का उच्चारण एवं वाक्य प्रयोग। ● शुद्ध वाक्य रचना का अभ्यास।

एक धनी व्यक्ति को कविताएँ सुनने का चाव था। उसका नाम धनपाल था। वह रोज नए-नए कवियों से कविताएँ सुनता। जिसकी कविता अच्छी लगती, धनपाल उस कवि को पुरस्कार देता।

धनपाल के नगर में एक निर्धन स्त्री रहती थी। उसका एक ही बेटा था। जिसका नाम था बिरजू, वह तुक मिलाकर छोटी-छोटी कविता बना लेता था। उसकी अधिकतर कविताएँ बड़ी ही अटपटी होती थीं।

एक दिन बिरजू की माँ ने उससे कहा– 'तुम धनपाल जी को अपनी कविता क्यों नहीं सुनाते। हो सकता है, वे कुछ न कुछ पुरस्कार दे दें। सुना है धनपाल बहुत दयालु हैं।'

माँ की बात सुनकर वह धनपाल से मिलने चल दिया। इस समय उसे कोई भी कविता नहीं सूझ रही थी। चलते-चलते उसने आसमान में उड़ती चिड़ियों का शोर सुना। उसने कुछ सोचकर कविता की एक पंक्ति बना ली– बदी बदा भाई बदी बदा।

दोपहर का समय था। गर्मी के कारण राह में सन्नाटा फैला था। बिरजू को एक पंक्ति और सूझ गई– 'चुपी चुपा, भई चुपी चपा।'

तभी उसे एक बकरी छलांग मारती भागती हुई दिखी। बिरजू ने अपनी कविता को आगे बढ़ाया-मार छलंगन, मार छलंगन।

बिरजू धनपाल के घर के पास पहुँचा पर अभी भी कविता की एक पंक्ति कम थी। उसने सोचा चलो जो होगा तो देखा जाएगा, अब तो राम का ही सहारा

शिक्षण-संकेत : ■ शिक्षक प्रेरणा देने वाली कोई कहानी सुनाएँ। ■ पाठ के वाचन में सभी बच्चों की सहभागीता सुनिश्चित करें। ■ संयुक्ताक्षर वाले शब्दों के शुद्ध उच्चारण के पर्याप्त अवसर दें। ■ अशुद्ध वाक्यों को शुद्ध करने का अभ्यास कराएँ।

है। यह सोचते ही उससे कविता की चौथी पंक्ति भी बन गई 'राम सरन भाई राम सरन।'

बिरजू ने धनपाल के पास जाकर अपनी कविता सुनाई–

बदी बदा, भाई बदी बदा।
चुपी चुपा, भई चुपी चपा॥
मार छलंगन, मार छलंगन।
राम सरन, भाई राम सरन॥

धनपाल को कविता समझ में नहीं आई। उसने कहा– 'तुम्हारी कविता में कुछ अर्थ नहीं है। ऐसी अटपटी कविता के लिए मैं तुम्हें कुछ नहीं दे सकता। फिर भी मैं रात को सोचूँगा। अभी तुम जाओ।'

बेचारा बिरजू निराश होकर लौट गया। रात हुई। धनपाल को दुःख था कि वह बिरजू की कोई सहायता नहीं कर सका था। उसे नींद नहीं आ रही थी। उसने सोचा, हो सकता है कविता में कोई अर्थ छुपा हो। वह कविता की पंक्तियाँ जोर–जोर से गाने लगा।

तभी पास के कमरे में धनपाल का नौकर राम सरन चोरी करने की नीयत से घुसा। जैसे ही वह धन चुराने के लिए तिजोरी तोड़ने लगा, उसे धनपाल की बोली सुनाई दी–

बदी बदा, भाई बदी बदा।

धनपाल की आवाज सुनकर नौकर राम सरन ने सोचा शायद उसके मालिक को मेरे इस गलत काम (बदी) की भनक लग गई है, इसलिए उसने तिजोरी तोड़ना बंद कर दिया। उधर धनपाल ने कविता की दूसरी पंक्ति कही–

चुपी चुपा, भई चुपी चपा।

रामसरन यह सुनकर समझा कि धनपाल को उसकी खबर हो चुकी है इसलिए वह छलांग मारकर कमरे से बाहर भागा।

तभी धनपाल ने तीसरी पंक्ति कही–

मार छलंगन, मार छलंगन।

अब तो रामसरन बुरी तरह डर गया। उसे लगा कि मालिक ने सब कुछ जान लिया है। रही सही कसर धनपाल की चौथी पंक्ति ने पूरी कर दी–

राम सरन, भाई रामसरन।

रामसरन को पूरा विश्वास हो गया कि धनपाल ने उसे देख लिया है। अब भागने से अच्छा है, अपनी गलती की क्षमा माँग लूँ। वह धनपाल के कमरे में जाकर उनके पैरों में लोट गया, और बोला– 'मालिक मुझे क्षमा कर दो आगे ऐसी भूल कभी नहीं

करुँगा।' आपने मुझे रोककर बहुत बड़े अपराध से बचा लिया। धनपाल की समझ में कुछ नहीं आया उसने पूछा– कैसी भूल। राम सरन ने उसे चोरी की नीयत से तिजोरी खोलने की बात बताई और वचन दिया कि वह फिर कभी ऐसा काम नहीं करेगा। धनपाल ने उस पर दया दिखाई और उसे क्षमा कर दिया।

बिरजू की अटपटी कविता के कारण धनपाल के लाखों रुपये चोरी जाने से बच गए। धनपाल ने दूसरे दिन बिरजू को बुलाकर उसकी कविता की बड़ाई की और पुरस्कार में बहुत सा धन देकर उसकी निर्धनता दूर कर दी।

शब्दार्थ

पुरस्कार	– इनाम	**शोर**	– हल्ला, कोलाहल
सन्नाटा	– चुप्पी	**अपराध**	– दोष, जुर्म
अटपटी	– ऊटपटांग, अजीब	**निर्धनता**	– गरीबी

अभ्यास

बोध प्रश्न

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए –

क. धनी व्यक्ति का क्या नाम था?

ख. धनपाल जी को किस चीज का शौक था?

ग. बिरजू की अधिकतर कविताएँ कैसी होती थीं?

घ. किसका शोर सुनकर बिरजू ने कविता की पहली पंक्ति बनाई?

ङ. बिरजू की माँ ने बिरजू से क्या कहा?

च. बिरजू ने कविता की दूसरी पंक्ति क्या बनाई?

छ. धनपाल जी ने बिरजू से क्या कहा?

ज. रामसरन ने चोरी क्यों नहीं की?

2. सही जोड़ी बनाइए –

धनपाल	नौकर
स्त्री	धनी
बिरजू	बिरजू की माँ
रामसरन	अटपटी कविता

3. दिए गए वाक्यों के सामने सही/गलत लिखिए –

क. धनी व्यक्ति को कविताएँ सुनने का चाव नहीं था। ☐

ख. धनपाल के नगर में एक निर्धन स्त्री रहती थी। ☐

ग. बकरी को उछलती देखकर बिरजू की तीसरी पंक्ति बनी। ☐

घ. बिरजू को पुरस्कार नहीं मिला। ☐

भाषा अध्ययन

1. निम्नलिखित शब्दों का शुद्ध उच्चारण कीजिए और वाक्यों में प्रयोग कीजिए –

व्यक्ति .....

पंक्ति .....

शक्ति .....

पक्का .....

सन्नाटा .....

पुरस्कार .....

2. 'धन' शब्द में पाल जोड़कर 'धनपाल' बना है। इसी प्रकार दिए गए शब्दों में पाल जोड़कर नए शब्द बनाइए –

धन	–	पाल	=	धनपाल
धर्म	–	.....	=	.....
सोम	–	.....	=	.....
मही	–	.....	=	.....

3. निम्नलिखित वाक्यों के रेखांकित शब्दों को शुद्ध करके लिखिए–

क. धनपाल के नगर में ही एक **निरधन इस्त्री** रहती थी।

.....

ख. धनपाल **बहूत दयालू** है।

.....

ग. **गरमी** के **कारन** राह में **सनाटा** **फेला** था।

.....

घ. धनपाल को **कवीता** समझ में नहीं **आया**।

.....

योग्यता विस्तार

- आप भी ऐसी कहानी सुनाइए जिसमें कोई काम अचानक बन गया हो।
- कविता की चार पंक्तियाँ बनाकर कक्षा में सुनाइए।
- बालसभा में आयोजित 'कवि दरबार' में कविता सुनाइए जो तुम्हें अच्छी लगती हो।
- 'अटपटी कविताएँ' याद कीजिए और सुनाइए।